३ ५ ६

१७

किन बिधि मिलै गुसाईं मेरे रामराइ ।
(गुरु अर्जुनदेव जी)

महाराज चरनसिंह जी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सत्संग

किन बिधि मिलै गुसाई मेरे राम राइ ॥

यह पाँचवीं पातशाही श्री गुरु अर्जुनदेव जी महाराज की वाणी है। इस छोटे से शब्द में आप गुरुमत के सम्बन्ध में, गुरु नानक साहब के घर की शिक्षा और उपदेश के सम्बन्ध में, बड़ी अच्छी तरह स्पष्टता-पूर्वक समझा रहे हैं। आप समझाते हैं कि यह दुनिया जो हमें आँखों से दिखाई दे रही है, यह अपने आप ही उत्पन्न नहीं हुई है। कोई न कोई इसकी रचना करने वाला है, कोई न कोई इसकी देखभाल करने वाला है, चलाने वाला है, सँभाल करने वाला है। वह कौन है? वह एक परमात्मा है, वाहिगुरु है, परमेश्वर है, जिसके हज़ारों, अनेकों ही नाम हमने अपने-अपने प्यार में आकर रखे हैं। हमारी आत्मा उस परमात्मा का अंश है, हम उस सतनाम समुद्र की बूंद हैं, उस मालिक से बिछुड़ कर माया के जाल में फँसे हुए हैं। यहाँ आकर हमारी आत्मा ने मन का साथ ले लिया है। मन आगे इन्द्रियों के भोगों, विषय-विकारों, शराबों-कबाबों, दुनिया के धन्धों का प्रेमी है। जो जो कर्म, हम मन के अधीन होकर करते हैं, अच्छे भी करते हैं, बुरे भी करते हैं, उन सभी का नतीजा साथ-साथ हमारी आत्मा को भी भोगना पड़ता है। इस दुनिया को महात्माओं ने कर्म-भूमि, 'कर्मा संदड़ा खेत' कहकर समझाने की कोशिश की है, क्योंकि धरती में हम जो भी कोई बीज बोते हैं, उसी फसल को काटने के लिए हमें जाना पड़ता है। इसी तरह देह में बैठकर अच्छे कर्म करते हैं तो अच्छा नतीजा भुगतने के लिए आ जाते हैं, अगर बुरे कर्म करते हैं तो बुरा नतीजा भुगतने के लिए आ जाते हैं। न कभी अच्छे कर्मों के द्वारा देह के बन्धनों से मुक्त हो सकते हैं, न कभी बुरे कर्मों के द्वारा जन्म-मरण के दुःखों से बच सकते हैं। अगर नेक कर्म करते हैं तो यह नतीजा होता है कि सेठ-साहूकार बन जाते हैं, राजा-महाराजा बन जाते हैं, कौमों, मज़हबों, मुल्कों की हुकूमत प्राप्त करके आ जाते हैं। लोहे की ज़ंजीरें उतर जाती हैं, सोने की बेड़ियाँ पड़ जाती हैं, 'सी' क्लास से बच कर 'ए' क्लास प्राप्त कर लेते हैं। ज़्यादा से ज़्यादा स्वर्गों और बैकुण्ठों में चले जाते हैं। ये भी भोग-योनियाँ हैं, नियत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय और अवधि के लिए हैं । उसके बाद फिर हमें इसी चौरासी के जेलखाने में आना पड़ता है। अगर बुरे कर्म करते हैं तो हमारे लिए नरक और चौरासी तैयार ही रहते हैं। क्या राजा, क्या प्रजा, क्या अमीर क्या गरीब, क्या औरत क्या आदमी—दुनिया के हम सभी जीव इस जगह आकर अपने-अपने कर्मों का हिसाब दे रहे हैं। और उन कर्मों के कारण जिस जगह जाकर हमें जन्म लेना पड़ता है उसी जामे में बैठ कर दु:ख और मुसीबतें सहनी पड़ती हैं । किसी भी जामे में जाकर कोई सुख हासिल नहीं कर सकता, कोई शान्ति प्राप्त नहीं कर सकता। निचले जामों के बारे में तो क्या विचार करना है, आप इन्सान के जामे के बारे में विचार करके देखें—जिसे हम सृष्टि का सिरमौर कहते हैं, जिसे अशरफ़-उल-मख़लूकात कह कर याद करते हैं, जिसको ऋषि-मुनियों ने नर-नारायणी देह कह कर भी समझाने की कोशिश की है। इस देह में बैठ कर भी क्या कभी कोई सुख हासिल कर सकता है, या शान्ति प्राप्त कर सकता है ? कोई बीमारी के हाथों तंग आया बैठा है, कोई बे-रोज़गारी के हाथों दु:खी है, किसी के बाल-बच्चे नहीं हैं, वह तंग हो रहा है, कइयों को बाल-बच्चे दु:खी कर रहे हैं। किसी को कर्ज़ा लेना है, किसी को कर्ज़ा देना है । रोज़ अख़बार पढ़ते हैं, रेडियो सुनते हैं; ये कौमों, मज़हबों और मुल्कों के झगड़े हमारा पीछा ही नहीं छोड़ते—कितने गरीबों का खून होता है, कितनी स्त्रियाँ विधवा होती हैं, कितने बच्चे अनाथ होते हैं। जिस नगरी में यह हालत है कि रोटी-कपड़े के लिए भटकते और तड़पते फिरते हैं, उस नगरी के अन्दर आकर हम सुख किस तरह प्राप्त कर सकते हैं, शान्ति कैसे प्राप्त कर सकते हैं । अगर कोई मनुष्य के चोले में बैठ कर सुख हासिल नहीं कर सकता, आप खुद विचार कर सकते हैं कि वह और किस शरीर के अन्दर जाकर सुख और शान्ति प्राप्त कर सकेगा ? इसलिए गुरु नानक साहिब समझाते हैं :—

पिर सचे ते सदा सुहागणि ॥ (आदि ग्रन्थ, ७५४)

जब तक आतमा रूपी स्त्री परमात्मा रूपी पति के चरणों में नहीं पहुँचती, यह कभी सुहागिन नहीं हो सकती, इसका जन्म-मरण के दु:खों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से कभी छुटकारा नहीं हो सकता । इसलिए हर किसी को परमात्मा की खोज है । हम सब दुनिया के जीव वापिस जाकर उस परमात्मा के साथ मिलना चाहते हैं ।

अब हम सभी अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार हजारों ही युक्तियों और तरीकों से उस परमात्मा को खोजने की कोशिश करते हैं । जप-तप करते हैं, पूजा-पाठ करते हैं, पुण्य-दान करते हैं, घर-बार छोड़ कर जंगलों-पहाड़ों में छिप कर बैठ जाते हैं, मन्दिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों में भी जाते हैं और वेद-शास्त्र भी पढ़ते हैं । ये सारे साधन, सारे तरीके केवल परमात्मा से मिलने के लिए करते हैं । इस शब्द में सेवक गुरु साहब से प्रश्न करता है कि हे गुरुदेव ! आप कोई ऐसा तरीका या मार्ग बतायें जिस पर चल कर जीवन के चार दिन भी सुख और शान्ति से कट सकें और वापिस जाकर अपने मालिक से मिलाप भी हो सके और हम अपनी भक्ति में भी सफल हो सकें । गुरु साहब सेवक के हरएक प्रश्न का उत्तर विधिपूर्वक (तरीके के साथ) देते हैं ।

कोई ऐसा संतु सहज सुख दाता मोहि मारगु देइ बताई ।।

आप समझाते हैं कि भाई ! परमात्मा से मिलने का केवल एक ही तरीका है, एक ही साधन है । वह कौन-सा तरीका है ? कि तुझे ऐसा सन्त-महात्मा मिल जाये जिसे सहज अवस्था प्राप्त हुई हो और जो परमात्मा की ओर से सुखों का दाता बन कर आया हो । वह तुझे मालिक से मिलने का तरीका समझा दे, साधन समझा दे, और तू उसके अनुसार परमात्मा की भक्ति करे, तब तू इस भक्ति में सफल हो सकता है । क्योंकि जब भी हम परमात्मा की भक्ति कर सकेंगे, गुरुमुखों के द्वारा, साधु-सन्तों-महात्माओं के द्वारा ही कर सकेंगे । हमें किस प्रकार के महात्मा की खोज करनी है ? जिसको सहज अवस्था प्राप्त हुई हो । सहज अवस्था कब प्राप्त होती है ? जब हम मन और माया के दायरे से पार चले जाते हैं, जब आत्मा पर से सब गन्दे-गन्दे गिलाफ उतर जाते हैं, जब हमारी आत्मा और मन की गांठ खुल जाती है । उस समय हम अपने आपको पहचानने के योग्य बन जाते हैं । गुरु नानक साहिब कहते हैं :—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुरमुखि आपु पछाणै संतहु रामनामि लिव लाई ।। (आदि ग्रन्थ, ९१०)

आप गुरुमुख उनको कहते हैं जो राम-नाम के साथ प्यार करके अपने आपको पहचानने के योग्य बन जाते हैं। हम अपने आपको तभी पहचान सकते हैं जब मन और माया से पार चले जाते हैं, जब हमारे मन और आत्मा की गांठ खुल जाती है। उस महात्मा में और कौन-सी खूबी या विशेषता होनी चाहिये? ऐसे महात्मा को सुखों का दाता होना चाहिये। वह मालिक की ओर से सुखों का दाता बन कर आया हो। आप देखें, अगर किसी का भण्डार भरा हो परन्तु उसे देने का हुक्म न हो तो हम उससे क्या लाभ उठा सकेंगे? अगर किसी का भण्डार खाली है और वह बांटने लगा है, उससे भी क्या लाभ ले सकते हैं? हमें तो ऐसे दाता की ज़रूरत है जिसका भण्डार भी भरा हुआ हो, और मालिक की ओर से उसे देने का भी हुक्म हो। अगर किसी ने कानून का इम्तिहान तो पास कर लिया है, परन्तु सरकार उसको जज नहीं बनाती तो वह हमारे मुकदमे का कभी फैसला नहीं कर सकता। जिसने कानून का इम्तिहान पास किया हुआ है और सरकार जिसको जज नियुक्त कर देती है, उससे हम अपने मुकदमे का फैसला करवा सकते हैं। इसलिये गुरु साहिब कहते हैं कि उन गुरुमुखों की खोज करनी है जो मालिक की ओर से सुखों के दाता बन कर आये हों, जिनका भण्डार भी भरा हो और जिनको मालिक की ओर से देने का भी हुक्म हो।

ऐसे सन्त-महात्मा क्या करते हैं? वे हमें मालिक की भक्ति का साधन और तरीका समझाते हैं। वे उपदेश देते हैं कि जिस परमात्मा की हम खोज कर रहे हैं वह परमात्मा कहीं बाहर नहीं है, वह हमारे शरीर के अन्दर है, हमारी देह और वजूद के अन्दर है। हमारा रूहानी सफर पैरों के तलवों से लेकर सिर की चोटी तक है। इस सफर के दो भाग हैं—एक आँखों तक है, दूसरा आँखों से ऊपर है। हमारे शरीर के अन्दर जो आतमा और मन की जगह है, जिसको कोई शिव-नेत्र कहता है, कोई दिव्य-चक्षु कहता है, कोई घर-दर कहता है, कोई मुक्ति का दरवाज़ा कहता है, वह जगह हरएक की आँखों के पीछे है। अगर कोई भूली हुई चीज़ हमें याद करनी हो तो हमारा हाथ अपने आप ही इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नुक्ते या केन्द्र को पकड़ कर बैठ जाता है। हम कभी किसी भूली हुई चीज़ को याद करने के लिये पैरों या टांगों पर हाथ नहीं मारते। इस जगह का हमारे सोचने के साथ बड़ा गहरा सम्बन्ध है। यह जगह हमारी आत्मा और मन की बैठक है। यहीं से हमारा ख़याल उतर कर इन नौ द्वारों के ज़रिये सारी दुनिया के अन्दर फैल जाता है। यहां बैठे हुए किसी समय हमें बाल-बच्चों का, किसी समय घर के कारोबार का ख़याल आ जाता है, कभी दुकान के ग्राहकों का ख़याल आ जाता है। मन कभी भी निश्चल होकर नहीं बैठता। किसी न किसी चीज़ के सोच और विचार में लगा ही रहता है। हमारे मन को यह जो सारा दिन सोच और विचार करने की आदत पड़ी हुई है, महात्मा इसको सुमिरन करना कहते हैं। यह सुमिरन करने की आदत तो हरएक को कुदरती ही पैदा हो चुकी है। अपने आपको कितनी ही अँधेरी कोठरियों में क्यों न बन्द कर लें, हमारा ख़याल वहां नहीं होगा, बल्कि सारी दुनिया के अन्दर फैला हुआ होगा। और जिसका भी हम सुमिरन करते हैं उसकी शक्ल भी हमारी आँखों के सामने आकर खड़ी हो जाती है। अगर बेटे-बेटियों का सुमिरन करते हैं, बेटे-बेटियां आँखों के सामने आकर खड़े हो जाते हैं, अगर घर के कारोबार का सुमिरन करते हैं, घर के कारोबार आँखों के आगे आ जाते हैं। इसको महात्मा ध्यान धरना कहते हैं। अब जिसका हम सुमिरन करते हैं उसी का हम ध्यान धरना शुरू कर देते हैं और जिनका सुमिरन और ध्यान करते हैं उनके साथ हमारा मोह पैदा हो जाता है। उन शक्लों और पदार्थों के साथ हमारा इतना मोह और प्यार हो जाता है कि रात को हमें सपने भी उनके ही आते हैं और मौत के समय उन्हीं की शक्लें सिनेमा के चलचित्र की तरह हमारी आँखों के आगे आकर खड़ी हो जाती हैं। और 'जहां आसा तहां बासा', जिधर हमारा अन्तिम समय ख़याल होता है, हम दुनिया के जीव उधर ही बहना शुरू कर देते हैं। सो कौन-सी चीज़ है जो हमें बार-बार देह के बन्धनों में लेकर आई ? सुमिरन और ध्यान ले कर आया। किन चीज़ों का सुमिरन और ध्यान ? जिन्हें नष्ट हो जाना है, फ़नाह हो जाना है। जो कुछ भी हम आँखों से देख रहे हैं यह सभी नष्ट हो जायेगा,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फ़नाह हो जायेगा। सो महात्मा कहते हैं कि सुमिरन और ध्यान की आदत हमें कुदरती पड़ी हुई है। इसलिये मन की इस आदत से फायदा उठाना चाहिये। लेकिन उसका सुमिरन करो, उसका ध्यान धरो जो कभी नष्ट नहीं होगा, फ़नाह नहीं होगा। वह कौन है ? वह केवल एक परमात्मा है, अकाल पुरुष है, वाहिगुरु है, परमेश्वर है, जिसके हज़ारों-अनेकों ही नाम हरएक ने अपने-अपनें प्यार में आकर रखे हुए हैं। इसलिये महात्मा हमें एक परमात्मा के नाम का सुमिरन करने का तरीका बताते हैं।

जब सुमिरन के द्वारा हम ख़याल को आँखों के पीछे इकट्ठा करते हैं, हमारा ख़याल यहाँ टिकता नहीं, यह बार-बार नीचे की तरफ आता है। जब तक हमें ख़याल को आँखों के पीछे ठहराने की आदत नहीं पड़ती, जब तक हमारा ख़याल यहां टिकता नहीं, तब तक यह शब्द और नाम की लज़्ज़त प्राप्त नहीं कर सकता। किसके स्वरूप का ध्यान करके ख़याल आँखों के पीछे टिक सकता है ? परमात्मा को तो हममें से किसी ने देखा नहीं, जिसका स्वरूप ही पता न हो उसका ध्यान हम किस तरह कर सकते हैं ? और जो कुछ भी हम आंखों से देख रहे हैं वह सब ही नाशवान है। केवल एक परमात्मा ही ऐसा है जो कभी नष्ट नहीं होता, कभी फ़नाह नहीं होता। इसलिये गुरु नानक साहिब फ़रमाते हैं :—

निहचलु एकु आपि अबिनासी, सो निहचलु जो तिसहि धिआइदा ॥
(आदि ग्रन्थ, १०७६)

वह परमात्मा कभी जन्म-मरण के दुःखों में नहीं आता। जो उस परमात्मा का ध्यान करते हैं, वे भी निहचल हो जाते हैं, उनका भी जन्म-मरण के दुःखों से छुटकारा हो जाता है। अब ख़याल पैदा होता है कि मालिक को किसी ने देखा नहीं, उसका ध्यान किस तरह किया जा सकता है ? इसलिये समझाते हैं :—

हरि का सेवकु सो हरि जेहा ॥ भेदु न जाणहु माणस देहा ॥
(आदि ग्रन्थ, १०७६)

जो मालिक के भक्त और प्यारे होते हैं वे मालिक की भक्ति करके मालिक का ही रूप हो जाते हैं। उनमें और परमात्मा में कोई भी भेद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं होता। उनका मालिक के साथ क्या सम्बन्ध और ताल्लुक होता है ?

जिउ जल तरंग उठहि बहु भाती फिरि सललै सलल समाइदा ॥

(आदि ग्रन्थ, १०७६)

जिस तरह समुद्र में दो चार मिनिट के लिए एक लहर उठती है और वापस जाकर समुद्र में ही समा जाती है। जो लहर का समुद्र के साथ सम्बन्ध है, वही मालिक के भक्तों और प्यारों का परमात्मा के साथ सम्बन्ध होता है। इसलिये महात्मा कहते हैं कि हमें उनके स्वरूप का ध्यान करना है क्योंकि उनका असली स्वरूप शब्द होता है; नाम होता है और हमारा भी जो असली गुरु है, वह भी शब्द है, वह भी नाम है। मालिक के भक्त और प्यारे नाम में से ही आते हैं, शब्द और नाम का ही प्रचार करते हैं और वापस जाकर उसी शब्द और नाम में ही समा जाते हैं। इसलिये गुरु नानक साहिब समझाते हैं :—

गुर की मूरति मन महि धिआनु ॥ (आदि ग्रन्थ, ८६४)

कि गुरुमुखों के स्वरूप को अपने मन में रखना है। स्वामीजी महाराज कहते हैं :—

गुरु का ध्यान कर प्यारे। बिना इस के नहीं छुटना ॥

(सार वचन, १४३)

यही हज़रत ईसा ने बाइबिल में समझाया है, "तुमने मुझे देखा है, मैंने अपने पिता अर्थात परमात्मा को देखा है, इसलिये मेरे द्वारा तुमने भी उस परमात्मा को देखा है। तुम मेरे अन्दर समाये हुए हो, मैं उस परमात्मा के अन्दर समाया हुआ हूँ, इसलिये तुम भी मेरे द्वारा उस परमात्मा के अन्दर समाये हुए हो।" इसलिये महात्मा कहते हैं कि हमें गुरुमुखों के स्वरूप का ध्यान धरना है, क्योंकि उनके अलावा जो कुछ भी हम इस दुनिया के अन्दर आँखों से देख रहे हैं, ये सब चीज़ें पाँच तत्वों की बनी हुई हैं। ये पाँच तत्व हैं—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। जब ये तत्व ही नष्ट हो जायेंगे, तो इन तत्वों से जो चीज़ें बनी हुई हैं, वे हमारे ध्यान करने के योग्य किस तरह हो सकती हैं ? मैंने पहले भी कई बार निवेदन किया है कि जिस समय प्रलय आती है, यह पृथ्वी पानी में घुल जाती है, पानी को अग्नि सुखा देती है, अग्नि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को हवा उड़ा देती है और हवा को आकाश खा जाता है—इस सारी दुनिया में धुन्धुकार छा जाता है। जब तत्व ही नष्ट हो जाते हैं, तत्वों की बनी हुई चीज़ें किस प्रकार बच सकती हैं? सो जो कुछ भी हम आँखों से देख रहे हैं इसके अन्दर कोई भी चीज़ हमारे ध्यान के योग्य नहीं है। केवल गुरुमुख या मालिक के भक्त और प्यारे ही हमारे ध्यान के योग्य हैं, क्योंकि उनका असली स्वरूप शब्द होता है, नाम होता है। सो सुमिरन के द्वारा ख़याल को आँखों के पीछे इकट्ठा करना है, ध्यान के द्वारा ख़याल को आँखों के पीछे ठहराना है। फिर हमें अपने आप ही समझ आ जाती है कि वह मीठी से मीठी, सुरीली से सुरीली आवाज़ जो मालिक की दरगाह से आ रही है, वह चोरों के अन्दर भी है, साधू, सन्तों, महात्माओं के अन्दर भी है, जहां न किसी कौम का सवाल है, न किसी मज़हब का सवाल है, न किसी मुल्क का सवाल है। कोई हिन्दू होकर अन्दर जाये, सिख या ईसाई होकर अन्दर जाये, जो खुशकिस्मत, भाग्यशाली आँखों के पीछे ख़याल को इकट्ठा करता है, वह अपने अन्दर उस शब्द की आवाज़ को सुनना शुरू कर देता है, उस शब्द के प्रकाश को देखना शुरू कर देता है। हमें उस आवाज़ के द्वारा अन्तर में अपने घर का रुख कायम करना है, अपने घर की दिशा का पता लगाना है और उस प्रकाश के द्वारा अन्तर में अपने घर का रूहानी मार्ग देखना है। गुरु नानक साहिब कहते हैं:—

अंतरि जोति निरंतरि बाणी साचे साहिब सिउ लिव लाई॥

(आदि ग्रन्थ, ६३४)

हरएक की आंखों के पीछे ज्योति जग रही है और 'निरंतरि बाणी'—उस ज्योति के अन्दर से मीठी और सुरीली आवाज़ पैदा हो रही है। जो भाग्यशाली लोग उस ज्योति के दर्शन करते हैं, उस शब्द की आवाज़ को अन्तर में पकड़ते हैं—'साचे साहिब सिउ लिव लाई'—उनका दुनिया में से मोह और प्यार निकल जाता है और परमात्मा के साथ मोह और प्यार पैदा हो जाता है। इसलिये हमें उस ज्योति के दर्शन करने हैं, उस प्रकाश को देखना है और उस शब्द की आवाज़ को अपने अन्दर पकड़ना है। इसी को महात्मा सच्चा शब्द

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और सच्चा नाम कहते हैं। सच्चा इसलिये कहते हैं कि न तो उसे आँखों से देखा जा सकता है, न जबान से उसका वर्णन किया जा सकता है, न कानों से सुना जा सकता है। उसको हुजूर महाराज जी (बाबा सावनसिंह जी) 'अनरिटन लॉ, अनस्पोकन लैंग्वेज' अर्थात् अलिखित कानून और अनबोली भाषा कह कर याद किया करते थे। उसी नाम की गुरु नानक साहिब महिमा करते हैं:—

> अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा ॥
> पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा ॥
> जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा ॥
> नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा ॥
>
> (आदि ग्रन्थ, १३९)

कि तुम उस सच्चे शब्द को पकड़कर अपने खसम अर्थात् परमात्मा से मिल सकते हो, जिसे किसी की आँखें नहीं देख सकतीं, किसी की ज़बान जिसका वर्णन नहीं कर सकती, किसी के कान सुन नहीं सकते, न किसी के हाथ लेकर पहुँच सकते हैं, न किसी के पैर लेकर पहुँच सकते हैं और जिसे जीते-जी मर कर ही प्राप्त किया जा सकता है। जीते-जी मरने का अर्थ है कि जिस चीज़ को नौ दरवाज़ों में से ख़याल को निकाल कर, आँखों के पीछे एकाग्र करके प्राप्त करना है। जिस समय किसी की मृत्यु होती है, पैरों के तलवों से ख़याल सिमट कर जब आँखों तक आ जाता है, फिर आत्मा शरीर को छोड़ कर एक तरफ हो जाती है। सो इसी विधि और तरीके के द्वारा ख़याल को आँखों के पीछे इकट्ठा करके अन्तर में शब्द की लज़्ज़त हासिल करनी है, नाम की लज़्ज़त प्राप्त करनी है। इसीलिए गुरु नानक साहिब प्यार के साथ समझाते हैं कि जब हमें कोई मालिक का भक्त और प्यारा मिल जाता है, वह समझा देता है कि किस तरह सुमिरन के द्वारा ख़याल को आंखों के पीछे इकट्ठा करना है, ध्यान के द्वारा ख़याल को आँखों के पीछे ठहराना है, किस तरह शब्द को पकड़ कर उस प्रकाश की सहायता से मंज़िल-दर-मंज़िल अन्तर में अपना रूहानी सफर तय करना है, किस तरह अन्तर में रूह और मन की गांठ खुलती है, किस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तरह हम अपने आपको पहचानने के योग्य बनते हैं, वापिस जाकर उस परमात्मा को पहचानने के योग्य बनते हैं। उस साधन और तरीके का हमें गुरुमुखों से ही पता लगता है, सन्तों-महात्माओं से ही पता लगता है। इसलिये कहते हैं, भाई ! यह मालिक से मिलने का तरीका है; यह मालिक की भक्ति करने का साधन है।

अंतरि अलखु न जाई लखिआ विचि पड़दा हउमै पाई ।।

अब गुरु साहिब फ़रमाते हैं कि जिस परमात्मा की तुम्हें खोज है, जिस परमात्मा से तुम मिलना चाहते हो, वह परमात्मा कहीं बाहर नहीं है—'अंतरि'—वह हरएक के शरीर के अन्दर है, हरएक की देह और वजूद के अन्दर है। न तो बाहर वह कभी किसी को मिला है, न बाहर किसी को मिल ही सकता है। अगर कोई प्रयोगशाला है जिसके अन्दर जाकर हम मालिक से मिलने की खोज कर सकते हैं तो वह केवल हमारा शरीर, हमारी देह और हमारा वजूद है। किसी भी महात्मा की वाणी पढ़ कर देख लें, यही उपदेश मिलता है। गुरु साहिब कहते हैं :—

घरै अंदरि सभु वथु है बाहरि किछु नाही ।। (आदि ग्रन्थ, ४२५)

भाई ! जो कुछ भी तू दिन-रात खोज रहा है, वह तेरे शरीर के अंदर है। जिस परमात्मा ने सब-कुछ पैदा किया है वह बाहर नहीं है, वह हर एक के शरीर और देह के अन्दर बैठा हुआ है। गुरु साहिब कहते हैं :—

सदा हजूरि दूरि न जाणहु ।। गुर सबदी हरि अंतरि पछाणहु ।।
(आदि ग्रन्थ, ११६)

वह परमात्मा तुम्हें कहीं जंगलों-पहाड़ों में नहीं मिलेगा। न वह किसी आसमान के पीछे छिपा हुआ है, न हिमालय पर्वत के पीछे छिपा बैठा है, और न ही वह किसी बड़े गुरुद्वारे, मन्दिर या मस्जिद में मिलेगा। वह तो चौबीसों घण्टे तुम्हारे साथ है, तुम्हारे शरीर के अन्दर है, तुम्हारी देह और वजूद के अन्दर है। लेकिन—'गुरसबदी हरि अंतरि पछाणहु'—गुरुमुखों के द्वारा शब्द और नाम की कमाई करके हमें उस परमात्मा को अपने अन्दर ही पहचानने की कोशिश करनी है। यही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हज़रत ईसा नें बाइबिल में समझाया है, 'पश्चाताप करो, खुदा की बादशाहत तुम्हारे अन्दर है।' अर्थात् जो कुछ कर्म तुम पिछले जन्मों में कर बैठे हो, जिनके कारण देह के बन्धनों में फँसे हुए हो उनका मालिक की भक्ति करके पश्चात्ताप करो, परमात्मा कहीं बाहर नहीं है, वह तुम्हारे शरीर के अन्दर ही बैठा हुआ है, वह तुम्हारी देह और वजूद के अन्दर बैठा हुआ है। इसीलिये महात्मा कहते हैं कि अगर कोई सच्चे से सच्चा गुरुद्वारा है, मन्दिर है, मस्जिद है, ठाकुरद्वारा है तो वह केवल हमारा शरीर, हमारी देह, हमारा वजूद है। ऋषियों-मुनियों ने इसे 'नर-नारायणी देह' कहा है, गुरु नानक साहिब 'हरि-मन्दिर' कह कर याद करते हैं, हज़रत ईसा ने इसको 'ज़िन्दा खुदा का मन्दिर' कह कर वर्णन किया है। हरएक महात्मा का एक ही मतलब है।

अब मन में ख़याल आता है कि अगर परमात्मा हमारे शरीर के अन्दर है तो हमें नज़र क्यों नहीं आता? हम आँखें बन्द करते हैं तो हमें अपने अन्दर अँधेरा ही अँधेरा नज़र आता है। गुरु साहिब कहते हैं, 'विचि पड़दा हउमै पाई' कि मालिक या परमात्मा तो ज़रूर हमारे अन्दर है, लेकिन हमारे और मालिक के बीच हौमैं की रुकावट है, अहं का परदा है, खुदी, और मैं-मेरी की रुकावट है। हौमैं क्या है? यह जो हम सारा दिन सोचते रहते हैं—यह मेरी जाति है, मेरा धर्म है, मेरा देश है, मेरी सन्तान है, मेरी जायदाद है—जिनको सारा दिन मेरा-मेरा करते हैं, ज़रा सोच कर देखें, यह तो सब-कुछ ही उस परमात्मा का है, हमारा तो इनके साथ केवल लेन-देन का सम्बन्ध है, गरज़ और स्वार्थ का प्यार है। हम अपने आपको मालिक से अलग समझे बैठे हैं, इनको अपना बनाने की कोशिश करते हैं, ये आज तक न कभी किसी के बने हैं, न कभी बन सकते हैं, लेकिन अपना बनाने की जो कोशिश करते हैं, यह कोशिश हमें इनके मोह में फँसा देती है, इनके प्यार में फँसा देती है। इन शक्लों और पदार्थों के साथ इतना मोह और प्यार पैदा हो जाता है कि रात को सपने भी इनके ही आने लगते हैं और मृत्यु के समय इन्हीं की शक्लें सिनेमा के चलचित्र की तरह आँखों के आगे आकर खड़ी हो जाती हैं। अन्तिम समय जिस ओर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारा ख़याल होता है हम दुनिया के जीव उसी प्रवाह में बहना शुरू कर देते हैं। सो कौन-सी चीज़ हमें बार-बार देह के बन्धनों में ले आई? दुनिया का प्यार और मोह ले आया। यह किसने पैदा किया? हमारे मन ने पैदा किया। इसलिये गुरु नानक साहिब कहते हैं कि परमात्मा तो ज़रूर हरएक के अन्दर है, लेकिन अगर कोई रुकावट या परदा है तो वह हमारे हौमैं का है, अहं और खुदी का है। गुरु नानक साहिब समझाते हैं :—

आपे गुपतु परगटु है आपे, गुर सबदी आपु वंञावणिआ ॥
(आदि ग्रन्थ, १२४)

वह परमात्मा तो कण-कण, पत्ते-पत्ते के अंदर व्यापक है, वह परमात्मा हरएक के शरीर के अन्दर है, चोरों के अन्दर भी है, ठगों के अन्दर भी है। पर किसी जगह गुप्त है, किसी जगह प्रकट है। गुप्त क्यों है और जो गुप्त है वह प्रकट किस तरह हो सकता है? गुप्त इसलिए है कि हमारे और मालिक के बीच में अपने आपकी रुकावट है, खुदी और अहं की रुकावट है, हौमैं की रुकावट है। वह प्रकट किस तरह होगा? जब हम गुरुमुखों के द्वारा शब्द की कमाई करेंगे, नाम की कमाई करेंगे। इसलिये फ़रमाते हैं :—

जीवन मुकतु सो आखीऐ जिसु विचहु हउमै जाइ ॥
(आदि ग्रन्थ, १०१०)

मृत्यु के बाद तो क्या हम जीते-जी ही मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं अगर हमारे अन्दर से यह हौमैं निकल जाये, यह खुदी और अहं की रुकावट दूर हो जाये। लेकिन इस हौमैं की रुकावट को अपने अन्दर से कैसे दूर करना है? क्यों हम इस दुनिया के मोह और प्यार में फँसे हुए हैं? अपने अन्दर ही मालिक की खोज क्यों नहीं करते? इन प्रश्नों का उत्तर गुरु साहिब आगे देते हैं।

माइआ मोहि सभो जगु सोइआ इहु भरमु कहहु किउ जाई ॥१॥

गुरु साहिब कहते हैं, हम सब दुनिया के जीव माया के जाल में फँस कर मोह की मीठी नींद सोये हुए हैं। मालिक का किसी को पता नहीं, मालिक की भक्ति की ओर किसी का ख़याल ही नहीं जाता। इन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषयों-विकारों, शराबों-कबाबों से हमें फुरसत ही नहीं मिलती। हम मन में सोच लेते हैं—'इह जग मिट्ठा अगला किन डिट्ठा', 'बाबर ब-ऐश कोश कि आलम दोबारा नेस्त', कि शायद परमात्मा ने हमें यह अवसर बेटे-बेटियों के प्यार के लिये बख़्शा है या कौमों, मज़हबों, मुल्कों के झगड़ों के लिए बख़्शा है। हम इन्द्रियों के भोगों में इतना फँसे हुए हैं कि और तो और अपनी मौत को भी भूले बैठे हैं। रोज़ देखते हैं कि हमारे साथी हमारा साथ छोड़ कर जा रहे हैं, बल्कि हम एक-एक के साथ चल कर खुद उन्हें श्मशान-भूमि तक छोड़ कर आते हैं और आँखों से देख कर आते हैं कि कोई चीज़ किसी के साथ नहीं जाती। लेकिन हमारे मन में यही भ्रम रहता है कि शायद इन शक्लों और पदार्थों ने उनका साथ नहीं दिया, हम सब-कुछ ही इकट्ठा करके अपने साथ ले जायेंगे। हुज़ूर महाराज जी बड़ा सुन्दर उदाहरण दिया करते थे कि एक राजा हिरन का शिकार खेलता हुआ घने जंगल में चला जाता है। आगे शेर दिखाई देता है। उससे डर कर वह एक पेड़ पर चढ़ कर बैठ जाता है। अब जिस पेड़ के तने पर बैठा है, क्या देखता है कि एक सफेद और एक काला चूहा पेड़ के उस तने को कुतर रहे हैं। उसे ख़याल आता है कि जब पेड़ का तना कमज़ोर हो जायेगा, मैं नीचे गिर जाऊँगा। नीचे क्या देखता है कि एक सांप मुंह बाये (खोले) खड़ा है। वह और भी डर जाता है कि सांप मुझे डस लेगा और शेर तो पहले ही खड़ा मेरा तमाशा देख रहा है और इधर यह पेड़ का तना लगातार कमज़ोर होता जा रहा है। गर्मी का मौसम था, ऊपर शहद का छत्ता लगा हुआ था। गर्मी के कारण जब वह शहद पिघल कर उसकी जीभ पर गिरता है तो उसे शहद का स्वाद आना शुरू हो जाता है और शहद के मिठास में वह ऐसा लीन हो जाता है कि वह पेड़ के कमज़ोर तने को भी भूल जाता है, चूहों के कुतरने को भी भूल जाता है, सांप और शेर को भी भूल जाता है। यह तो महात्मा एक उदाहरण देकर समझा रहे हैं। पेड़ क्या है? हमारी ज़िन्दगी है, जितनी हम आयु लेकर आये हैं। चूहे क्या हैं? दिन और रात हैं जो हमारी ज़िन्दगी को कम करते चले जा रहे हैं। शहद के छत्ते क्या हैं?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन्द्रियों के भोग, विषय-विकारों की लज़्ज़तें हैं। सांप क्या है ? मृत्यु है जो हमारा हरएक का इन्तिज़ार कर रही है। शेर क्या है ? काल है, जो कि खड़ा तमाशा देख रहा है। महात्मा फ़रमाते हैं कि हम इन्द्रियों के भोगों में इतना फँसे हुए हैं कि और तो और अपनी मौत को भी भूले बैठे हैं। जब मालिक की भक्ति की ओर हमारा ख़याल ही नहीं है, प्यार ही नहीं है तो हम शरीर में आकर मालिक की भक्ति कर किस तरह सकते हैं ? इन वहमों, भ्रमों और संकल्पों में से हमारा ख़याल कब बाहर निकलता है और हम कब अन्दर जाकर मालिक की भक्ति शुरू करते हैं ? कब गुरु-भक्ति को धारण करते हैं ? इस विषय में गुरु साहिब आगे इशारा करते है।

एका संगति इकतु गृहि बसते मिलि बात न करते भाई ।।

गुरु साहिब कहते हैं, देखो ! कितने आश्चर्य की बात है कि दोनों इकट्ठे रहते हैं और एक ही घर में दोनों का निवास है, लेकिन आपस में फिर भी मिलाप नहीं है। आत्मा भी हरएक के शरीर के अन्दर रहती है और परमात्मा भी हर शरीर के अन्दर निवास करता है, लेकिन न कभी आत्मा ने परमात्मा के दर्शन किये, न हमारी आत्मा कभी सुहागिन हुई। गुरु साहिब इसका कारण बतलाते हैं कि हमारे और मालिक के बीच में हौमैं की रुकावट है, खुदी और अहं की रुकावट है, मन की रुकावट है। जब तक यह मन की रुकावट हमारे रास्ते से दूर नहीं होती, उस परमात्मा के निस्संदेह हरएक के अन्दर होते हुए भी, हमारी आत्मा कभी भी वापस जाकर उस मालिक से मिलने के योग्य नहीं हो सकती। यह मन ही तो है जिसके अधीन होकर भाई, भाई का दुश्मन है, क़ौम, कौम की दुश्मन है, मज़हब, मज़हब का दुश्मन है। हम किस तरह सारा दिन एक-दूसरे के गले काटने की तदबीरें और उपाय सोचते रहते हैं। यह जो कुछ भी हमसे करा रहा है, हमारा अपना मन करा रहा है। जब तक हम मन पर हावी नहीं होते, मन पर काबू नहीं पा लेते, मन की रुकावट को रास्ते से दूर नहीं करते, उस परमात्मा के अन्दर निवास करते हुए भी हम उससे नहीं मिल सकते। गुरु साहिब मन के विषय में खोल कर समझाते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

3336

एक बसतु बिनु पंच दुहेले ओह बसतु अगोचर ठाई ।।२।।

फ़रमाते हैं कि एक चीज़ के बिना, पांच दुश्मन हमारे पीछे लगे हुए और उन पांच दुश्मनों के हाथों हम हज़ारों तरह के दुःख और मुसीबतें उठा रहे हैं। वह कौन-सी चीज़ है? वह शब्द और नाम की कमाई है। वे पांच दुश्मन कौन से हैं? काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हैं, ये पांचों के पांचों मन के डंक हैं। मन कभी काम में फँसा देता है, कभी लोभ-मोह में फँसा देता है। लेकिन जब तक मन की ये कामनायें दूर नहीं होतीं, उस परमात्मा के अन्दर रहते हुए भी, हम कभी भी उसे पा नहीं सकते। जब घर वाला ही सोया पड़ा हो, चोरों और डाकुओं का राज होता है, जो इच्छा हो लूट कर ले जायें। अगर घर वाला जाग पड़ता है, चोर और डाकू कभी उसके निकट भी नहीं आते। जब हमारा मन शब्द और नाम की लज़्ज़त में लग जाता है, हम जन्म-जन्मान्तरों के सोये हुए जाग उठते हैं। जब तक इसने शब्द और नाम को बिसारा हुआ है, जीव इन्द्रियों के भोगों का गुलाम बना हुआ है, जो भी इन्द्रिय चाहती है इसे अपने घाट पर खींच कर ले जाती है। गुरु साहिब के समझाने का अर्थ है कि अगर तुम परमात्मा से अपने शरीर के अन्दर ही मिलना चाहते हो तो मन की रुकावट को दूर करो। मन की रुकावट किस तरह दूर होती है? केवल शब्द और नाम की कमाई के द्वारा। यह मन लज़्ज़त का आशिक है। जब तक हमारे मन को दुनिया के मोह से, दुनिया के प्यार से ऊँची और पवित्र लज़्ज़त नहीं मिलती, यह दुनिया का मोह, दुनिया का प्यार कभी भी छोड़ने को तैयार नहीं होता। लड़कियां गुड़ियों से तभी तक प्यार करती हैं जब तक उनकी शादी नहीं होती। शादी के बाद कौन गुड़ियों से प्यार करता है। हम दिन-रात कौड़ियों के पीछे दर-ब-दर ठोकरें खाते फिरते हैं, अगर हमें हीरे-जवाहरात मिल जायें तो फिर कौड़ियों की ओर देखते तक नहीं। जिसे मीठी चीज़ खाने को मिल जाती है उसका फीकी चीज़ की ओर ध्यान किस तरह जा सकता है? इसलिये गुरु नानक साहिब कहते हैं :—

नामु मिलै मनु तृपतीऐ बिनु नामै ध्रिगु जीवासु ।। (आदि ग्रंथ, ४०)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अगर हमारे मन को अन्दर अमृत भरा हुआ नाम मिल जाये तो हमारे मन में तृप्ति और शान्ति आ जाती है। आप फ़रमाते हैं कि अगर देह में बैठ कर हम उस अमृत रूपी नाम को प्राप्त नहीं करते, तो हमारे देह में आने को ही धिक्कार है, हमारा देह में आने का उद्देश्य ही पूरा नहीं हो सकता, ध्येय ही पूरा नहीं हो सकता। सो मन जब भी वश में आता है केवल शब्द की लज़्ज़त हासिल करके, नाम की लज़्ज़त हासिल करके ही आता है। गुरु साहिब कहते हैं, क्योंकि हम अन्दर नाम की खोज नहीं करते, अन्दर शब्द और नाम की लज़्ज़त हासिल नहीं करते, इसलिये हमारा मन दिन-रात हमें अंगुलियों पर नचाता रहता है, ये पाँचों डाकू रात-दिन हमें घेरे रहते हैं। इन पाँच डाकुओं से हमारा छुटकारा कब होगा ? जब शब्द और नाम के साथ ख़याल जुड़ जायेगा। लेकिन जिस शब्द और नाम की गुरु साहिब महिमा करते हैं उसके साथ ख़याल को किस तरह जोड़ना है ? इस सम्बन्ध में आगे इशारा करते हैं।

जिसका गृहु तिनि दीआ ताला कुंजी गुर सउपाई ।।
अनिक उपाव करे नही पावै बिनु सतिगुर सरणाई ।।३।।

अब फ़रमाते हैं जिस परमात्मा ने हमें पैदा किया है उसने वह नाम रूपी दौलत हमारे अन्दर हमारे लिये ही रख कर उसका भेद या चाबी गुरुमुखों के हवाले कर दी हैं। जब तक उन गुरुमुखों से भेद नहीं मिलता या हमें साधन और तरीके का पता नहीं लगता, चाबी नहीं मिलती, तब तक उस दौलत के हमारे हरएक के अन्दर होते हुए भी, हम अपने अन्दर उसे प्राप्त किस तरह कर सकते हैं ! किसी के घर करोड़ों रुपये का खज़ाना क्यों न हो, अगर बाहर ताला लगा हो, चाबी उसके पास न हो तो वह उस खज़ाने से लाभ किस तरह उठा सकता है ? उसे तो चाबी वाले को ढूंढना पड़ेगा, उससे चाबी लेकर ताला खोलना पड़ेगा। फिर उस दौलत को निकाल कर, उस दौलत का स्वामी बन कर, बादशाह बना जा सकता है।

गुरु साहिब कहते हैं, नाम कहीं बाहर नहीं है, वह हमारे शरीर के अन्दर है, हमारी देह और वजूद के अन्दर है। लेकिन यह केवल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुरुमुखों को पता है कि वह नाम या शब्द हमारे शरीर के अन्दर कौन-सी जगह है और किस तरह अन्दर अपने ख़याल को उसके साथ जोड़ना है। ग्रन्थों-पोथियों, वेदों-शास्त्रों में महात्मा केवल नाम की महिमा करते हैं। उन ग्रंथों-पोथियों को पढ़ने से नाम की कमाई करने के तरीके और ढंग का पता लगता है, लेकिन ग्रंथों-पोथियों के पढ़ने से ख़याल नाम के साथ नहीं जुड़ता। जो कुछ पढ़ते हैं उस पर अमल करके ही हमारा ख़याल नाम के साथ जुड़ सकता है। इसी प्रकार सत्संग में हम नाम की चर्चा करते हैं, ज़िक्र करते हैं, परन्तु सत्संग सुनने से किसी का ख़याल नाम के साथ नहीं जुड़ता। जो कुछ सुनते हैं उस पर अमल करने से ख़याल नाम के साथ जुड़ता है। मन्दिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों में जाते हैं वहाँ नाम के बारे में कीर्तन किया जाता है, नाम की चर्चा की जाती है, लेकिन वहाँ जाकर हाज़री लगवा देने मात्र से ख़याल नाम के साथ नहीं जुड़ता। जिस चीज़ का कीर्तन सुन कर आते हैं, उस पर विचार करके आँखों के पीछे ख़याल को इकट्ठा करने पर ही अपने अन्तर में शब्द की लज़्ज़त हासिल कर सकते हैं, नाम की लज़्ज़त हासिल कर सकते हैं। इसलिये गुरु साहिब कहते हैं—'जिसका गृहु तिनि दीआ ताला'—भाई ! जिस परमात्मा ने तुझे पैदा किया है उसने नाम रूपी दौलत तेरे अन्दर तेरे ही लिये रखी हुई है और किसी के लिये नहीं। लेकिन जब तक तू शरीर के अन्दर प्रवेश करके खोज नहीं करेगा, तब तक तू उस दौलत को प्राप्त किस तरह कर सकेगा ? खोज किस तरह करनी है ? 'कुंजी गुर सउपाई'—गुरुमुखों के पास जाना है, वह तुझे भेद देंगे कि किस प्रकार शरीर के अन्दर प्रवेश करके सुमिरन और ध्यान के द्वारा खोज करनी है।

अब मन में विचार उठता है कि महात्मा सत्संग में सुमिरन की बहुत चर्चा करते हैं, ध्यान की भी चर्चा करते हैं, ग्रंथ-पोथियों में भी अनेक संकेत दिये गये हैं, क्या हम उन ग्रंथ-पोथियों को पढ़ कर, सुन-सुन कर, ख़याल को नाम के साथ नहीं जोड़ सकते। गुरु साहिब फ़रमाते हैं—'अनिक उपाव करे नही पावै बिनु सतिगुर सरणाई'—मन-बुद्धि के द्वारा कितने ही उपाय और युक्तियाँ तुम क्यों न सोच लो, जब तक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम बिना किसी शर्त के अपने आपको गुरुमुखों के हवाले नहीं करते, मन की मति छोड़ कर गुरुमुखों की मति पर चल कर खोज नहीं करते, तब तक उस नाम की दौलत से, जो परमात्मा ने हमारे अन्दर निश्चित रूप से हमारे लिये ही रखी है, हम कभी भी पूरा-पूरा लाभ नहीं उठा सकते। इसलिये गुरु नानक साहिब हमें प्यार से समझाते हैं कि गुरुमुखों की शरण हासिल करनी है, उनके बताये हुए उपदेश पर चलना है। गुरुमुख यह नहीं कहते कि बेटे-बेटियों को छोड़ देना है या घर-बार छोड़ देना है अथवा जाति या धर्म बदलना है। गुरुमुख कहते हैं कि दुनिया में रहना है, सूरमा बन कर रहना है, बहादुर बन कर रहना हैं, पर दुनिया में रहते हुए दुनिया की मैल में नहीं लिपटना है। केवल सुमिरन और ध्यान के ज़रिये ख़याल को आँखों के पीछे इकट्ठा करना है और अन्तर में शब्द की लज़्ज़त हासिल करनी है, नाम की लज़्ज़त प्राप्त करनी है। गुरु साहिब कहते हैं :—

कासट महि जिउ है बैसंतरु मथि संजमि काढि कढीजै ॥
रामनामु है जोति सबाई ततु गुरमति काढि लईजै ॥

(आदि ग्रन्थ, १३२३)

कि जिस तरह लकड़ी के अन्दर अग्नि है, पर न तो कभी तुम्हें वह अग्नि दिखाई देती है, न तुम उस अग्नि से कभी फ़ायदा उठा सकते हो। अगर युक्ति से लकड़ी पर लकड़ी रगड़ना शुरू कर दो तो तुम अग्नि को देख भी सकते हो और अग्नि से फ़ायदा भी उठा सकते हो। इसी प्रकार यह राम नाम की धुन, राम नाम की ज्योति, हरएक की आँखों के पीछे जग रही है, लेकिन जब गुरुमुखों की बतलाई हुई युक्ति के द्वारा अन्दर प्रवेश करके खोज करोगें तभी उस धुन की आवाज़ को सुन सकोगे, उस शब्द के प्रकाश को अपने अन्तर में देख सकोगें। उस युक्ति और साधन के लिये हमें गुरुमुखों की संगति करनी पड़ती है, उनके बतलाये हुए उपदेश पर चलना पड़ता है।

जिन के बंधन काटे सतिगुर तिन साध संगति लिव लाई ॥

अब मन में ख़याल पैदा होता है कि हम गुरुमुखों की शरण किस तरह हासिल कर सकते हैं। गुरु साहिब समझाते हैं कि गुरुमुख खुद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही हमें अपनी शरण के योग्य बना लेते हैं, खुद ही अपनी शरण में ले आते हैं। वे किस तरह ले आते हैं?—'जिनके बंधन काटे सतिगुर तिन साध संगति लिव लाई'—जिन जिन जीवों को गुरुमुख देह के बन्धनों से मुक्त करना चाहते हैं, जिनको जन्म-मरण के दुःखों से छुड़ाना चाहते हैं, सबसे पहले उनके अन्दर सत्संग का प्यार पैदा करते हैं, अपनी संगति का प्यार पैदा करते हैं, क्योंकि हमारा मन संगति का बड़ी जल्दी असर लेता है। चोरों के पास बैठ जायें, चोरी करने की आदत पैदा हो जायेगी, शराब पीने वालों के पास बैठ जायें, शराब पीने की आदत पैदा हो जायेगी। जब मालिक के भक्तों और प्यारों के पास बैठना-उठना शुरू कर देते हैं तो उनको देख कर बरबस मालिक की भक्ति का शौक और प्यार पैदा हो जाता है : गुरु नानक साहिब कहते हैं :—

साकत सूतु बहु गुरझी भरिआ किउकरि तानु तनीजै ॥
तंतु सूतु किछु निकसै नाही साकत संगु न कीजै ॥
(आदि ग्रन्थ, १३२४)

कि भाई! जिस तरह उलझे हुए सूत से कभी कपड़ा नहीं बुना जा सकता, इसी तरह मनमुखों की संगति में जाकर तेरा ख़याल कभी भी परमात्मा की भक्ति की ओर नहीं जा सकता। गुरु साहिब फ़रमाते हैं—'गोबिंद जीउ सतसंगति मेलि हरि धिआईऐ'—हे परमात्मा! अपने भक्तों और प्यारों की संगति बख्श, सोहबत बख्श, उनका सत्संग बख्श, जिससे तेरा ध्यान कर सकें, तेरी भक्ति कर सकें। महात्मा सत्संग के द्वारा ही इन वहमों, भ्रमों और संकल्पों से हमारे ख़याल को निकालते हैं, सत्संग के द्वारा ही समझाते हैं कि आत्मा और परमात्मा का रिश्ता क्या है, आत्मा और परमात्मा के बीच रुकावट कौन-सी हैं और उस रुकावट को अपने अन्दर से किस तरह दूर करना है। इन सब बातों की समझ और सूझ गुरुमुखों की संगति से, गुरुमुखों की सोहबत से, गुरुमुखों के सत्संग से प्राप्त होती है। लेकिन गुरुमुख सत्संग उसको नहीं कहते जहाँ एक कौम दूसरी कौम को गालियां देती है, या जहां गुज़रे हुए राजा-महाराजाओं की कथा-कहानियां सुनाई जाती हैं और गुरुमुखों के सत्संग में कभी किसी की निन्दा और आलोचना नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होती। गुरुमुख तो सत्संग के द्वारा हमारे अन्दर मालिक से मिलने का शौक पैदा करते हैं, प्यार पैदा करते हैं। गुरु साहिब फ़रमाते हैं:—

सतसंगति कैसी जाणीऐ ॥ जिथै एको नामु वखाणीऐ ॥

(आदि ग्रन्थ, ७२)

सत्संग वह जगह है जहाँ एक मात्र शब्द का ही प्रचार किया जाता है, नाम का ही प्रचार किया जाता है। सो महात्मा सत्संग के द्वारा केवल शब्द का ही सन्देश देते हैं। यह तो बड़ी बुरी बात है कि अगर कोई हमारी बुद्धि के अनुसार नाम की भक्ति नहीं करता तो हम उसे गालियां देनी शुरू कर दें, बुरा-भला कहना शुरू कर दें। हमें तो उसे प्रेम से समझाना चाहिये कि भाई! देख, इस रास्ते पर चल कर हमें अपने अन्दर यह लाभ हुआ है, अगर तेरी समझ में आता है तो तू भी अपने ख़याल को अन्दर शब्द के साथ जोड़ कर यह लाभ प्राप्त कर सकता है। कबीर साहिब कहते हैं:

कबीर संगत साध की जौ की भूसी खाइ।
खीर खांड भोजन मिलै साकत संग न जाइ॥

मनमुखों की संगति में जाकर खीर, खांड, हलवे खाने की बनिस्बत मालिक के भक्तों और प्यारों की संगति में जाकर सूखे टुकड़े चबाने हज़ार दरजे अच्छे हैं। क्यों? आप फ़रमाते हैं:—

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी से पुनि आध।
कबीर संगत साध की, कटे कोटि अपराध॥

कि आधी से आधी घड़ी भी जो मालिक के भक्तों और प्यारों की संगति करते हैं, उससे हमारे मन में हज़ारों प्रकार के वहम, भ्रम और संकल्प दूर होते हैं। पता नहीं महात्मा के कौन से वचन हमारे कानों में पड़ें जो हमारे सारे जीवन को ही बदल कर रख दें। इसलिये महात्मा हमेशा सत्संग पर ज़ोर देते हैं। यों तो सत्संग में ये ही तीन-चार बातें होती हैं, जो रोज़ ही बताई जाती हैं, किसी तरह भी उन्हें कह लें। हमें ठोकर लगती रहे, हमें कोई समझाता रहे, हमारे ख़याल को विषय-विकारों से निकालता रहे, हमारे अन्दर मालिक से मिलने का प्यार पैदा करता रहे तो थोड़ा-बहुत हमारा मन सीधा होकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मालिक के भजन की तरफ़ जाता है। इसलिये गुरु साहिब कहते हैं कि जब तक गुरुमुखों की शरण हासिल नहीं करते, हम मालिक से मिलने के योग्य नहीं बन सकते। हम शरण कब हासिल कर सकते हैं? जब गुरुमुख स्वयं दया करके हमें अपनी शरण के योग्य बना लेते हैं। वे किस तरह बनाते हैं? हमें अपनी शरण के योग्य बनाने के लिये वे हमें अपनी संगति में ले आते हैं, अपने सत्संग में ले आते हैं।

पंच जना मिलि मंगलु गाइआ हरि नानक भेदु न भाई ॥४॥

और फिर जब गुरुमुखों की संगति में जाकर मंगल गाते हैं अर्थात् शब्द और नाम की कमाई करते हैं, गुरु नानक साहिब कहते हैं कि तब हमारी इतनी ऊँची और पवित्र अवस्था हो जाती है कि 'हरि नानक भेदु न भाई'—हमारे और मालिक के बीच कोई भिन्नता और भेद ही नहीं रहता। अभी हमारे और मालिक के बीच में कौन-सी भिन्नता है? गुरु नानक साहिब समझा चुके हैं कि वह हौमैं की रुकावट है, खुदी और अहं की रुकावट है, मन की रुकावट हैं, पांचों डाकुओं की रुकावट है। लेकिन जब गुरुमुखों की संगति में जाकर शब्द और नाम की कमाई करते हैं, ये सब रुकावटें हमारे रास्ते से दूर हो जाती हैं, आत्मा और मन की गाँठ खुल जाती है, हम अपने आपको पहचानने के योग्य बन जाते हैं और वापस जाकर नाम की कमाई करके उस परमात्मा को हमेशा के लिये अपने अन्दर पहचानने के योग्य बन जाते हैं।

मेरे राम राइ इन बिधि मिलै गुसाई ॥

पहले सेवक ने गुरु साहिब से प्रश्न किया था—'किन बिधि मिलै गुसाई मेरे राम राइ'—हे सतगुरु! मुझे बताइये कि कौन-सी युक्ति और साधन है, जिसको अपना कर हम मालिक की भक्ति कर सकते हैं, मालिक की खोज कर सकते हैं। गुरु साहिब ने बड़ी अच्छी तरह क्रमानुसार समझाया है कि हमें किसी मालिक के ऐसे भक्त और प्यारे की संगति करनी है, जिसे सहज-अवस्था प्राप्त हुई हो और जो मालिक की ओर से सुखों का दाता बन कर आया हो। वह हमें मालिक की भक्ति करने का तरीका समझायेगा कि वह परमात्मा तुम्हारे शरीर के अन्दर है, केवल हौमैं की रुकावट है। अगर तुम्हें मालिक से मिलना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं, अपने शरीर के अन्दर से हौमैं की रुकावट को दूर करो। वह किस तरह दूर करनी है? गुरुमुखों के पास जाकर शब्द की कमाई करो, नाम की कमाई करो, तब जो भी रुकावटें रास्ते में आती हैं, दूर हो जाती हैं। फिर हमारी आत्मा निर्मल हो जाती है, पवित्र हो जाती है, तब हमारे और उस मालिक के बीच कोई भिन्नता और भेद नहीं रहता।

अब सारे प्रश्नों का उत्तर देने के बाद आप समझाते हैं—'मेरे राम राइ, इन बिधि मिलै गुसाईं'—हे भाई! मालिक से मिलने का केवल यही तरीका है, यही साधन है। न तो जाति बदलनी पड़ती है, न धर्म बदलना पड़ता है; न बेटे-बेटियों को छोड़ कर जंगलों-पहाड़ों में छिपना पड़ता है, न नीले उतार कर गेरुए पहनने पड़ते हैं, न गेरुए छोड़ कर नीले पहनने पड़ते हैं, न तुझे देह पर भभूत रमानी पड़ती है, न जटायें रखनी पड़ती हैं, न कान फड़वाने पड़ते हैं, न ग्रंथ-पोथियां पढ़ने की ज़रूरत पड़ती है, न सरोवरों में स्नान करने की ज़रूरत पड़ती है। अगर तुझे परमात्मा की ज़रूरत है तो शरीर के अन्दर प्रवेश करके सुमिरन और ध्यान के द्वारा आँखों के पीछे ख़याल को इकट्ठा करके अन्दर ही शब्द की लज़्ज़त को हासिल कर, नाम की लज़्ज़त को हासिल कर। सब कुछ तुझे इसी से प्राप्त होगा। सब प्रश्नों का उत्तर देकर गुरु साहिब कहते हैं कि अच्छी तरह मन में बिठा ले कि मालिक से मिलने का केवल एक ही साधन और तरीका है। गुरु साहिब कहते हैं:—

बिनु नावै होर पूज न होवी भरमि भुली लोकाई॥

(आदि ग्रन्थ, ९१०)

कि शब्द और नाम की कमाई के अलावा मालिक की कोई भक्ति और पूजा ही नहीं है। हम दुनिया के जीव यों ही वहमों और भ्रमों में फँस कर भूले फिरते हैं। जो कुछ मिलेगा, केवल उस नाम की कमाई से ही मिलेगा। विचार करें, अगर नाम की कमाई ही मालिक की एक-मात्र भक्ति है, तो यह ग्रंथ-पोथियां पढ़ना, पाठ करना किस काम आया, सरोवरों में स्नान करना किस काम आया, देह पर भभूत रमाना किस काम आया, जटायें रखनी किस काम आईं, नीले-गेरुए पहनने किस काम आये? फिर गुरु साहिब कहते हैं:—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नामु विसारि चलहि अन मारगि अंत कालि पछुताही ॥

(आदि ग्रन्थ, ११५३)

नाम की कमाई का तरीका छोड़ कर अन्य किसी भी तरीके पर चलने की कोशिश करोगे तो आखिर मृत्यु के समय तुम्हें पछताना पड़ेगा कि यों ही अपने कीमती समय को व्यर्थ की बातों में फँस कर गंवा दिया। क्यों पछताना पड़ता है ?

विणु नावै दरि ढोई नाही ता जमु करे खुआरी ॥ (आदि ग्रन्थ, ७५४)

नाम की कमाई के बिना कभी तुम्हें मालिक के घर पहुंचने की इजाज़त नहीं मिलेगी, यमदूतों के हाथों खराब होना पड़ेगा। सो जो कुछ मिलेगा वह केवल शब्द और नाम की कमाई से मिलेगा। कबीर साहिब नाम की कमाई की यहां तक महिमा करते हैं :—

नाम जपत कोढ़ी भला, चुइ चुइ पड़त जिस चाम।
कंचन देह किस काम की, जा मुख नाहीं नाम ॥

अगर कोई कोढ़ी परमात्मा की भक्ति में लगा हुआ है, वह उस मनुष्य से लाख दरजे अच्छा है, जो सोने की सी सुन्दर देह और दुनिया के सब हार-श्रृंगार लिये बैठा है पर उस परमात्मा को भूला हुआ है। इसीलिए आप कहते हैं :—

लूट सके तौ लूट लै, राम नाम नित लूट।
अन्त काल पछताओगे, जब तन जायेगा छूट ॥

हे भाई ! अगर देह में बैठ कर कोई लूटने योग्य चीज़ है, कोई इकट्ठी करने योग्य वस्तु है तो वह केवल शब्द की कमाई है, नाम की कमाई है, नहीं तो आखिर मृत्यु के समय पछताना पड़ता है कि यों ही बेकार की बातों में अपने सारे समय को बरबाद कर बैठे। गुरू साहिब सेवक को सब-कुछ समझा कर कहते हैं। अच्छी तरह मन में बिठा ले कि मालिक से मिलने का केवल यही एक तरीका है। यह एक साधन है।

सहजु भइआ भ्रमु खिन महि नाठा मिलि जोती जोति समाई ॥

अब सब-कुछ वर्णन करके आप फ़रमाते हैं—'सहजु भइआ भ्रमु खिन महि नाठा'—पहले हम कौन से भ्रम में फँसे हुए थे ? इस दुनिया को असल समझ कर इसके मोह और प्यार में उलझे हुए थे, इसे अपना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बनाने की कोशिश में लगे हुए थे। लेकिन जब गुरुमुखों के सत्संग में आकर असलियत और सच्चाई का पता लग गया, जब अन्दर शब्द और नाम के साथ ख़याल जुड़ गया तो हमारा ख़याल उस भ्रम में से निकल गया और शब्द को पकड़ कर हम मन और माया के दायरे से पार चले गये, फिर हमें सहज अवस्था प्राप्त हो गई। गुरु नानक साहिब कहते हैं—'जोती जोत समाई'—फिर हमारी ज्योति उस जोत में मिल जाती है। यह नहीं कि कोई मर गया, अरदास कर दी, पाठ कर लिये, पुण्य-दान कर दिया और कह दिया कि हे परमात्मा, इसकी जोती जोत में मिला ले। यह जो ज्योति-जोत में मिलती है यह जीते-जी मिलती है। अगर हम नहीं मिलायेंगे तो लोगों के उपाय करने से कभी भी हमारी जोती जोत में नहीं मिलेगी। जो कुछ प्राप्त करना है जीते-जी प्राप्त करना है। मैंने पहले भी निवेदन किया था, चोरों को मरने के बाद कोई भी सन्त-महात्मा नहीं बनायेगा, अनपढ़ों को वहाँ बी० ए०, एम० ए० की डिग्रियां नहीं मिल जायेंगी। जो कुछ हासिल करना है, जीते-जी हासिल करना है। सो गुरु साहिब कहते हैं अगर तुम जीते-जी ज्योति को जोत में मिलाना चाहते हो तो वहमों और भ्रमों में से अपने ख़याल को निकाल कर शब्द के साथ जोड़ो और सहज-अवस्था प्राप्त करो। तब ही हम भक्ति में सफल हो सकते हैं, मालिक से मिलने के योग्य बन सकते हैं।

सत्संग—१७

★

महाराज चरनसिंह जी

★

सर्वाधिकार सुरक्षित

★

दूसरी बार : नवम्बर १९८१—११,०००

★

प्रकाशक : एस. एल. सोंधी
सेक्रेटरी : राधास्वामी सत्संग, ब्यास

★

मुद्रक : अरविन्द प्रेस, फतेह पुरा, जालन्धर।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri